

देहरादून दर्शन
स्थानीय विरासत, संस्कृति और प्रकृति को डिजिटल शिक्षण से जोड़ने की पहल
Rakhi Pandey, DIET Dehradun

समस्या से विचार तक

देहरादून केवल उत्तराखण्ड की राजधानी नहीं, बल्कि **इतिहास, संस्कृति, प्रकृति, विज्ञान, शिक्षा और जैव-विविधता का जीवंत संगम** है। यहाँ अनेक ऐतिहासिक भवन, धार्मिक स्थल, प्राकृतिक क्षेत्र, वन-संपदा, नदियाँ, पारंपरिक जलस्रोत, शैक्षिक संस्थान और स्थानीय विरासत से जुड़े स्थान मौजूद हैं।

Forest Research Institute (FRI), सहस्रधारा, गुच्छूपानी, मालदेवता, टपकेश्वर महादेव मंदिर, बुद्ध मंदिर, खलंगा स्मारक तथा आसपास के अनेक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थल देहरादून की पहचान हैं। इसी प्रकार गाँवों और पुराने क्षेत्रों में आज भी पारंपरिक **घराट/जलचक्की, जलस्रोत, स्थानीय वनस्पतियाँ और लोकजीवन** से जुड़े ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जिनसे विद्यार्थी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

समस्या क्या है?

इतनी समृद्ध विरासत होने के बावजूद इसकी जानकारी अलग-अलग स्रोतों में बिखरी हुई है। कई बार स्थानीय विद्यार्थी भी अपने आसपास स्थित महत्वपूर्ण स्थानों का इतिहास, वैज्ञानिक महत्व या सांस्कृतिक विशेषता नहीं जानते।

पाठ्यपुस्तक में इतिहास, पर्यावरण, विज्ञान और संस्कृति को अलग-अलग अध्यायों में पढ़ाया जाता है, जबकि हमारे आसपास मौजूद वास्तविक स्थान इन सभी विषयों को एक साथ समझने का अवसर देते हैं।

इसी समस्या से एक विचार जन्म लेता है—

“क्यों न देहरादून को ही एक खुली कक्षा और जीवंत डिजिटल प्रयोगशाला बनाया जाए?”

इसी सोच के आधार पर **“देहरादून दर्शन”** जैसी डिजिटल वीडियो श्रृंखला अथवा स्थानीय डिजिटल रिपॉजिटरी विकसित की जा सकती है।

उद्देश्य

इस पहल के प्रमुख उद्देश्य हैं—

- देहरादून के प्रमुख ऐतिहासिक, प्राकृतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की जानकारी एकत्र करना।
- विद्यार्थियों को स्थानीय इतिहास और संस्कृति से जोड़ना।
- अपने आसपास की विरासत को खोजने और समझने की जिज्ञासा विकसित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों एवं जैव-विविधता के संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना।
- मोबाइल, वीडियो, QR Code, डिजिटल मैप और वेबसाइट जैसी तकनीकों का शैक्षिक उपयोग करना।
- देहरादून को केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि **“Living Learning Resource – जीवंत शिक्षण संसाधन”** के रूप में प्रस्तुत करना।

विद्यार्थी और शिक्षक इसे कैसे तैयार करें?

“देखो – खोजो – समझो – रिकॉर्ड करो – साझा करो”

इस परियोजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विद्यार्थी केवल जानकारी पढ़ने वाले नहीं, बल्कि **खोजकर्ता, शोधकर्ता और डिजिटल कंटेंट निर्माता** बन सकते हैं।

चरण 1 : अपने आसपास की विरासत खोजें

शिक्षक विद्यार्थियों को छोटे समूहों में बाँट सकते हैं। प्रत्येक समूह अपने आसपास किसी एक स्थान अथवा विषय का चयन करे, जैसे—

ऐतिहासिक स्थल → धार्मिक स्थल → प्राकृतिक स्थल → जलस्रोत → जैव-विविधता → पारंपरिक तकनीक → स्थानीय कला एवं संस्कृति।

उदाहरण के लिए एक समूह FRI, दूसरा टपकेश्वर, तीसरा सहस्रधारा, चौथा किसी पुराने घराट और पाँचवाँ स्थानीय औषधीय पौधों का अध्ययन कर सकता है।

चरण 2 : जानकारी एकत्र करें

विद्यार्थी केवल इंटरनेट से जानकारी कॉपी न करें। वे स्थानीय लोगों, बुजुर्गों, विशेषज्ञों और उपलब्ध पुस्तकों से जानकारी प्राप्त करें तथा स्थल का प्रत्यक्ष अवलोकन करें।

हर स्थल के लिए पाँच मूल प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

यह कहाँ है?

इसका इतिहास क्या है?

इसकी विशेषता क्या है?

हम इससे क्या सीख सकते हैं?

इसे संरक्षित करना क्यों जरूरी है?

चरण 3 : मोबाइल को Learning Tool बनाएं

अब विद्यार्थी मोबाइल फोन से स्थल की फोटो और छोटे वीडियो रिकॉर्ड कर सकते हैं। वे स्वयं 1–3 मिनट का परिचय दे सकते हैं।

उदाहरण—

“नमस्कार! आज हम देहरादून दर्शन के अंतर्गत एक पारंपरिक घराट के बारे में जानेंगे। पानी की ऊर्जा से चलने वाली यह तकनीक हमें बताती है कि हमारे पूर्वज बिना बिजली के भी प्राकृतिक ऊर्जा का उपयोग करना जानते थे।”

इस प्रकार विद्यार्थी **संवाद, प्रस्तुतीकरण, शोध, डिजिटल साक्षरता और रचनात्मकता**—सभी कौशल एक साथ सीखते हैं।

चरण 4 : QR Code से जोड़ें

प्रत्येक तैयार वीडियो, लेख या डिजिटल पेज का एक **QR Code** बनाया जा सकता है।

QR Code को संबंधित स्थल के सूचना-पट्ट, स्कूल की प्रदर्शनी, प्रोजेक्ट फाइल, मानचित्र अथवा पोस्टर पर लगाया जा सकता है।

कोई भी विद्यार्थी या पर्यटक मोबाइल से QR Code स्कैन करे और तुरंत उस स्थान से संबंधित—

वीडियो + फोटो + इतिहास + लोकेशन + विशेष जानकारी + संरक्षण संदेश

देख सके।

इस प्रकार एक सामान्य प्रोजेक्ट **Interactive Digital Heritage Project** में बदल जाता है।

डिजिटल “देहरादून दर्शन” रिपॉजिटरी

कल्पना कीजिए कि विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर देहरादून का एक **Digital Heritage Map** तैयार करें।

मानचित्र पर अलग-अलग स्थान चिह्नित हों। किसी स्थान पर क्लिक करते ही वहाँ का फोटो, विद्यार्थी द्वारा बनाया गया वीडियो, संक्षिप्त इतिहास, भौगोलिक स्थिति और QR Code सामने आ जाए।

एक स्थान – अनेक विषय

“देहरादून दर्शन” केवल सामाजिक विज्ञान का प्रोजेक्ट नहीं है। इसे विभिन्न विषयों से जोड़ा जा सकता है।

विज्ञान में जैव-विविधता, जल, वनस्पति और ऊर्जा का अध्ययन किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान में इतिहास, संस्कृति और स्थानीय समुदायों को समझा जा सकता है।

भूगोल में स्थलाकृति, नदी, जंगल और मानचित्रण किया जा सकता है।

भाषा में विद्यार्थी लेख, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार और वीडियो स्क्रिप्ट लिख सकते हैं।

कला में पोस्टर, फोटोग्राफी और डिजिटल डिजाइन तैयार किए जा सकते हैं।

आईसीटी में वीडियो एडिटिंग, QR Code, वेबसाइट, डिजिटल मैप और ऑनलाइन रिपॉजिटरी बनाई जा सकती है।

इस प्रकार एक ही स्थानीय स्थल **बहुविषयक शिक्षण (Multidisciplinary Learning)** का माध्यम बन सकता है।

विद्यार्थी क्या सीखेंगे?

इस परियोजना में विद्यार्थी केवल तथ्य याद नहीं करेंगे। वे स्वयं प्रश्न पूछेंगे, स्थल पर जाएंगे, प्रमाण जुटाएंगे, लोगों से बातचीत करेंगे, जानकारी की सत्यता जाँचेंगे और फिर उसे डिजिटल रूप में प्रस्तुत करेंगे।

इस प्रक्रिया से उनमें **Critical Thinking, Communication, Collaboration, Creativity, Digital Literacy, Research Skills और Problem Solving** जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित होंगे।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षक की भूमिका केवल जानकारी देने की नहीं, बल्कि **Mentor और Facilitator** की होगी। शिक्षक विद्यार्थियों को सही स्रोत चुनने, तथ्य सत्यापित करने, सुरक्षित फील्ड विजिट करने, कॉपीराइट का ध्यान रखने तथा गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री बनाने में मार्गदर्शन देंगे।

भविष्य की दिशा

यदि प्रत्येक विद्यालय अपने आसपास के केवल **5–10 महत्वपूर्ण स्थलों** का डिजिटल दस्तावेजीकरण करे, तो धीरे-धीरे पूरे जनपद की एक विशाल **Student-Created Digital Heritage Repository** तैयार की जा सकती है।

आगे चलकर इसमें **Google Maps, QR Codes, 360° फोटो, ड्रोन दृश्य, ऑडियो गाइड, बहुभाषी सामग्री और AI आधारित चैटबॉट** जैसी तकनीकों को भी जोड़ा जा सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह डिजिटल संग्रह केवल पर्यटकों के लिए नहीं होगा। यह विद्यार्थियों द्वारा विद्यार्थियों और समाज के लिए तैयार किया गया **स्थानीय ज्ञान का डिजिटल भंडार** होगा।

संदेश

“अपने आसपास को देखिए,
उसकी कहानी खोजिए,
तकनीक से उसे सुरक्षित कीजिए
और दुनिया के साथ साझा कीजिए।”

यही “देहरादून दर्शन” की मूल भावना है—जहाँ पूरा शहर एक कक्षा, प्रत्येक विरासत स्थल एक पाठ और प्रत्येक विद्यार्थी एक युवा शोधकर्ता एवं डिजिटल सृजनकर्ता बन सकता है।